नीली आँखों वाली लड़की

जयप्रकाश भारती

नीली आंखों वाली लड़की

जयप्रकाश भारती

यह उपहार

कहानी पढ़ने या सुनने को बच्चे उतावले रहते हैं। उन कहानियों को किसी घेरे में नहीं बांध सकते। तरह-तरह की कहानियां उन्हें चाहिएं। वेद-पुराण या रामायण-महाभारत की कहानियां, राजा-रानी की कहानियां, परियों की कहानियां, साहस-रोमांच की कहानियां, किसान-मजदूरों की कहानियां और प्रकृति की कहानियां। और भी वे सब कहानियां जो शहद जैसी मीठी हों। आसमान की आकाशगंगा की तरह झिलमिल करें और रोशनी की लकीर खींच दें।

ये कहानियां 'नंदन' के पाठकों के लिए लिखी थीं। 'नंदन' के पाठक लाखों में हैं। उन्होंने इन्हें पसंद किया। यह मांग भी बराबर करते रहे कि ये पुस्तक रूप में छपें। उन्हीं की मांग पर यह पुस्तक आ रही है। विश्वास है, पुस्तक का स्वागत होगा।

मास्ट्रिक्ट विश्वविद्यालय ने रचना को डाक्टरेट की उपाधि दी। नीदरलैंड्स में किसी भारतीय महिला को ऐसा सम्मान पहली बार मिला। उन्हीं डा. रचना कुमार को यह पुस्तक भेंट है।

पुस्तक अधिक से अधिक बच्चों तक पहुंचे, ऐसी कामना है।

-जयप्रकाश भारती

सम्पादक : 'नंदन'

कथाक्रम

नीली आंखों वाली लड़की	4
ढोल	9
मस्त कलंदर	12
गुब्बारे	17
सोया हुआ नगर	21
झील के किनारे	24
चार बेटों की गली	29
सफेद हाथी	33

नीली आंखों वाली लड़की

समंदर के किनारे मछुआरों के कुछ घर थे-छोटे-छोटे। समंदर में दूर-दूर तक जाकर मछलियां पकड़ना और फिर उन्हें बेच देना-यही उनका धंधा था। इन्हीं में एक मछुआरा था-कोरया। वह था और उसकी माँ थी। माँ अक्सर मछली पकड़ने के एक न एक जाल की मरम्मत करती रहती थी। आखिर सभी जाल पुराने हो गए थे। उन्हें ठीक किए बिना कोई चारा न था।

कोरया कभी-कभी दो-तीन दिन में घर लौटता। उसके पास काफी मछलियां होतीं। माँ कहती- 'समंदर की तुझ पर खास मेहरबानी है बेटा।"

एक बार कोरया की माँ बीमार पड़ गई। बेटे ने माँ का इलाज किया और टोने-टोटके भी किए, पर कुछ लाभ न हुआ। एक दिन माँ उसे छोड़कर चल बसी। कोरया खूब रोया। दुनिया में अब कोई भी उसका अपना न था।

वह अब समंदर में जाता तो दूर, बहुत दूर निकल जाता। घर लौटने को उसका मन न होता। आखिर में जब वह लौटता तो सब कुछ खाली-खाली लगता। एक दिन कोरया मछलियां पकड़ने निकला। लेकिन दोपहर तक कुछ भी उसके हाथ न लगा। मछलियां जैसे फिसल-फिसल कर उसके जाल से बच निकलती थीं। वह काफी आगे निकल आया था। अचानक काले-काले बादल घिर आए। उन्होंने सूरज को पूरी तरह ढक लिया। हवा चलने लगी और तेज-तेज होती गई। युवा कोरया ने घर की ओर लौटना चाहा, किंतु उसकी नाव ने तो जैसे जवाब दे दिया था।

लेकिन ईश्वर की कृपा थीं-कुछ अनहोनी न हुई। शाम तक हवा मंद पड़ गई। लहरें भी शांत हो चली। ऐसे में कोरया घर की ओर लौटने लगा। तभी उसने बंदरगाह के एक किनारे काली-काली चट्टानें देखी। वहीं उसे एक जहाज भी दिखाई दिया। जहाज खस्ताहाल था, मस्तूल उखड़े हुए। जहाज पर इधर-उधर कोई दिखाई नहीं दिया। कोरया झट से उस जहाज पर चढ़ गया। आदमी तो आदमी, कोई चूहा तक उसे वहां दिखाई न दिया।

कोरया नीचे की ओर गया, तो उसने कप्तान का केबिन देखा। केबिन में कीचड़ हो रही थी, घास उग आई